बालभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – चतुर्थ **दिनांक -04 -11 -2020**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज संज्ञा के विकार के बारे में अध्ययन करेंगे।

संज्ञा के विकार

जो शब्द संज्ञा में विकार या परिवर्तन लाते हैं, वे विकारी तत्व कहलाते हैं। लिंग, वचन तथा कारक के कारण संज्ञा का रूप बदल जाता है।
लिंग - संज्ञा शब्द के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, उसे लिंग कहते हैं।

लिंग के भेद
हिंदी भाषा में लिंग के दो भेद होते हैं

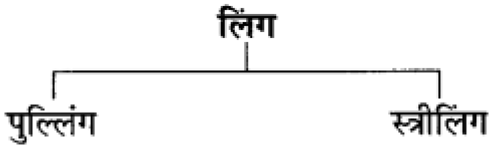

पुल्लिंग - जिन संज्ञा शब्दों से पुरुष जाति का बोध होता है वे पुल्लिंग कहलाते हैं; जैसे-बैल, पिता, घोड़ा, स्टेशन, अखबार, पेड़, घर आदि।
स्त्रीलिंग - जिन संज्ञा शब्दों से स्त्री जाति का बोध होता है, वे स्त्रीलिंग कहलाते हैं; जैसे-सेठानी, चिड़िया, मेज, कुरसी, टोकरी, लोमड़ी, दादी, मोरनी, अध्यापिका आदि।
हिंदी भाषा के सही प्रयोग के लिए संज्ञा शब्दों के लिंग का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि संज्ञा शब्दों के लिंग का प्रभाव सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा क्रियाविशेषण; जैसे

सर्वनाम पर -

(पुल्लिंग) अपना कमरा खोलो।

(स्त्रीलिंग) अपनी कोठरी खोलो।

विशेषण पर -

(पुल्लिंग) मुझे नीला पेंट चाहिए।

(स्त्रीलिंग) मुझे नीली साड़ी चाहिए।

क्रिया पर -

(पुल्लिंग) लड़का दौड़ा।

(स्त्रीलिंग) लड़की दौड़ी।

लिखकर याद करें।